

नरिधनता कहीं भी हो, हर जगह की समृद्धि के लिये खतरा होती है

नरिधनता क्रांति और अपराध की जननी है ।

—अरस्तू ।

प्रौद्योगिकी, व्यापार और संचार द्वारा आकार प्राप्त हमारे परस्पर संबद्ध विश्व में, यह दावा किया जाता है कि

"किसी भी स्थान/देश में नरिधनता हर जगह समृद्धि के लिये खतरा पैदा करती है" यह बात बहुत महत्वपूर्ण है । नरिधनता को अक्सर एक स्थानीय चुनौती के रूप में देखा जाता है, कति इसका प्रभाव सीमाओं से आबद्ध नहीं है, जो वैश्विक स्तर पर **अर्थव्यवस्थाओं, सामाजिक ढाँचों** और मानवता के समग्र कल्याण को प्रभावित करता है ।

अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) ने भी फिलाडेलफिया घोषणापत्र में इस सदिधांत को शामिल किया है । हालाँकि विरतमान परिदृश्य में अर्थव्यवस्थाओं की समृद्धता और जीवन की सुगमता देखी जा सकती है, कति यह वैश्विक नरिधनता की वास्तविकताओं से परे नहीं है ।

नरिधनता से होने वाले सबसे प्रत्यक्ष खतरों में से एक वैश्विक आर्थिक स्थिरता है । नरिधन क्षेत्रों में अक्सर बुनियादी ढाँचे, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा में निवेश करने के लिये संसाधनों की कमी होती है । इससे सीमिति आर्थिक अवसरों का चक्र बनता है, जिससे वैश्विक स्तर पर बाज़ार में भाग लेने की उनकी क्षमता बाधित होती है । इसके अलावा, व्यापक नरिधनता का अर्थ है उपभोक्ता आधार में कमी, जो नरियात पर निर्भर समृद्ध देशों में व्यवसायों की लाभप्रदता को प्रभावित करती है ।

नरिधनता में सरिफ भौतिक संसाधनों की कमी ही शामिल नहीं है; इसमें **शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, स्वच्छता** और आर्थिक उन्नति के अवसरों तक अपर्याप्त पहुँच भी शामिल है । **वैश्व बैंक ने अत्यधिक नरिधनता को 2.15 अमेरिकी डॉलर/दनि** से कम पर जीवन यापन करने वाले व्यक्तियों के रूप में परिभाषित किया है, कति नरिधनता के आयाम आय सीमा से आगे बढ़कर **शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक बहिष्कार जैसे बहुआयामी कारकों को भी शामिल करते हैं । नीति आयोग** के अनुसार, शहरी क्षेत्रों के लिये नरिधनता रेखा **1,286 रुपए प्रतिमाह** और ग्रामीण क्षेत्रों के लिये **1,059.42 रुपए प्रतिमाह** नरिधारित की गई है ।

स्थानीय स्तर पर, नरिधनता विभिन्न रूपों में प्रकट होती है, जिसमें **भुखमरी, अपर्याप्त आवासन** एवं शिक्षा तथा स्वास्थ्य सेवा तक **सीमिति पहुँच शामिल है । नरिधन समुदायों में, व्यक्तियों को रोगों, कुपोषण और शोषण के प्रति अत्यधिक संवेदनशीलता का सामना करना पड़ता है । नरिधन परिवारों के बच्चों को अक्सर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच की कमी का सामना करना पड़ता है**, जिससे पीढ़ियों तक नरिधनता का चक्र चलता रहता है । इसके अतिरिक्त, नरिधनता **सामाजिक अशांति और अपराध को जनम दे सकती है, जिससे** समुदाय और भी अस्थिर हो सकते हैं एवं आर्थिक विकास में बाधा आ **आर्थिक विकास** पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालती है । आर्थिक रूप से **सुधरती है ।**

से वंचित क्षेत्रों में, **बीमारी, कुपोषण और शिक्षा की कमी के कारण उत्पादकता में कमी से मानव पूंजी** कम हो जाती है, **जिससे आर्थिक विकास की संभावना बाधित होती है ।**

इसके अलावा, नरिधनता बाज़ार के अवसरों और उपभोक्ता खर्च को सीमिति करती है, मांग को दबाती है और आर्थिक वसितार में बाधा डालती है । वैश्विक संदर्भ में, नरिधनता **अंतरराष्ट्रीय व्यापार और निवेश को कमजोर करती है**, राष्ट्रों के बीच आर्थिक असमानताओं में योगदान देती है और वैश्विक आर्थिक एकीकरण की दशा में प्रयासों को बाधित करती है ।

स्थानीय झुग्गी-झोपड़ियों (स्लम्स) में, परिवारों को **अत्यधिक भीड़भाड़ वाले, अनुचित आवास** में रहने के लिये विवश किया जा सकता है, जहाँ **स्वच्छ जल एवं आवश्यक स्वच्छता** तक पहुँच सीमिति होती है । इससे **रोगों का प्रसार हो सकता है** तथा मौजूदा स्वास्थ्य समस्याएँ और भी बढ़ सकती हैं । करिए की उच्च लागत कई परिवारों को एक ही कमरे को साझा करने के लिये विवश कर सकती है, जिससे गोपनीयता सीमिति होती है एवं स्वच्छता में बाधा आ सकती है । उदाहरण के लिये, धारावी विश्वभर में झुग्गियों में रहने वाले कई परिवारों द्वारा सामना की जाने वाली जीवकान की जटिल चुनौतियों का स्मरण कराता है । **भीड़भाड़, अपर्याप्त स्वच्छता और सीमिति संसाधन ऐसे गंभीर मुद्दे हैं जिन्हें ध्यान देने और समाधान की आवश्यकता है । झुग्गी-झोपड़ियों में निवास करने वालों के लिये आवासन स्थितियों में सुधार और बेहतर अवसर प्रदान करने के प्रयास अधिक समतापूर्ण समाज के नरिमाण हेतु महत्वपूर्ण हैं ।**

नरिधनता के सामाजिक परिणाम बहुत गंभीर और दूरगामी हैं । नरिधनता **सामाजिक असमानताओं को बढ़ावा देती है**, कमजोर समूहों को हाशिये पर धकेलती है और अभाव के चक्र को जारी रखती है । इसके अलावा, नरिधनता **सामाजिक सामंजस्य और स्थिरता को कमजोर करती है**, समुदायों के मध्य **आक्रोश एवं**

अशांति को बढ़ाती है। कुछ मामलों में, नरिधनता सामाजिक अशांति, संघर्ष एवं बड़े पैमाने पर पलायन को जन्म दे सकती है, जिसका क्षेत्रीय स्थिति और वैश्विक सुरक्षा पर प्रभाव पड़ता है। उदाहरण के लिये, अफगानिस्तान एक गंभीर मानवीय संकट और नरिधनता का सामना कर रहा है, जहाँ लगभग 28.8 मिलियन लोगों को तत्काल सहायता की आवश्यकता है। दशकों से जारी आर्थिक पतन ने लाखों अफगानों को नरिधनता को संबोधित करने तथा अपनी मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये संघर्ष करने पर विवश किया है। खाद्य असुरक्षा एक गंभीर मुद्दा है, जिसमें 17.2 मिलियन लोग संकट या खाद्य असुरक्षा के बदतर स्तर का सामना कर रहे हैं।

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) द्वारा वर्ष 2019 में किये गए एक अध्ययन में नरिधनता, असमानता और हसिक संघर्ष के बीच एक संबंध पाया गया। यह अस्थिरता अर्थव्यवस्थाओं को बाधित करती है, निवेश में बाधा डालती है एवं लोगों को पलायन करने के लिये विवश करती है, जिससे शरणार्थी संकट उत्पन्न होता है जो विकासित देशों पर बोझ डालता है। उदाहरण के लिये, सीरियाई गृहयुद्ध, जो आंशिक रूप से नरिधनता एवं सामाजिक असमानता से प्रेरित था, ने शरणार्थियों के बड़े पैमाने पर यूरोप की ओर पलायन को जन्म दिया, जिससे मेजबान देशों में सामाजिक सेवाओं और सुरक्षा बलों पर दबाव पड़ा।

स्वास्थ्य सेवा तक पहुँच एक मौलिक मानव अधिकार है, फरि भी नरिधनता अक्सर लोगों को इस आवश्यक सेवा से वंचित करती है। नरिधन समुदायों में, स्वास्थ्य सुविधाओं, दवाओं और प्रशिक्षित स्वास्थ्य सेवा पेशेवरों तक सीमित पहुँच स्वास्थ्य असमानताओं को बढ़ाती है और निवारण योग्य रोगों के प्रसार को बढ़ाती है। इसके अलावा, नरिधनता सार्वजनिक स्वास्थ्य हस्तक्षेपों को कमजोर करती है, संक्रामक रोगों के नदिन में औस्मातु एवं शशु स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के प्रयासों में बाधा डालती है। उप-सहारा अफ्रीका के कई ग्रामीण क्षेत्रों में, नरिधनता स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुँच को सीमित करती है। इन क्षेत्रों में अक्सर आवश्यक चिकित्सा सुविधाओं, अस्पताल और प्रशिक्षित पेशेवर चिकित्सकों की कमी होती है।

भारत में ग्रामीण समुदाय स्वास्थ्य सेवाओं तक अपर्याप्त पहुँच की गंभीर समस्या का सामना कर रहे हैं। स्वास्थ्य सेवा पर सार्वजनिक व्यय सीमित है एवं नरिधन स्वास्थ्य सेवा मुख्य रूप से शहरी क्षेत्रों में कार्य करती है। ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोग अक्सर स्वास्थ्य सेवाओं हेतु लंबी दूरी (100 कमी तक) तय करते हैं। भारत ग्रामीण क्षेत्रों में योग्य चिकित्सा कर्मियों की अपर्याप्तता का सामना कर रहा है। कुशल सार्वजनिक स्वास्थ्य परणालियों की अनुपस्थिति समस्या को और बढ़ा देती है। नरिधनता की उच्च दर स्वास्थ्य सेवा तक पहुँच में बाधा डालती है। लगभग 90% आबादी बीमा द्वारा कवर नहीं है और अधिकांश लागतों का भुगतान जब से या ऋण के माध्यम से किया जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में नरिधनता के कारण स्वास्थ्य संकेतकों में असमानताएँ देखी जाती हैं, जिसमें शशु मृत्यु दर, कुपोषण, मातृ मृत्यु दर, कम टीकाकरण दर और कम जीवन प्रत्याशा दरें शामिल हैं।

नरिधनता एक चक्रिय प्रभाव उत्पन्न करती है जो शिक्षा सहित जीवन के कई पहलुओं को प्रभावित करती है। कम आय वाले परिवारों के बच्चे अच्छे स्कूल, यूनिफॉर्म या परिवहन, खर्च वहन करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं, भले ही सार्वजनिक शिक्षा मुफ्त हो। यह उन्हें स्कूल में दाखिला लेने या पूरी तरह से भाग लेने से रोक सकता है।

संसाधनों की कमी से बच्चों की अधिगम क्षमता में बाधा आ सकती है और वे अपना समग्र विकास प्राप्त करने से वंचित रह सकते हैं। यह नरिधनता के चक्र को भी बनाए रख सकता है, क्योंकि जिन बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा नहीं मिलती, उन्हें आजीविका के समुचित अवसर नहीं मिलते हैं।

नरिधनता और पर्यावरण क्षरण एक दूसरे से बहुत करीब से जुड़े हुए हैं, जो अभाव और पारस्थितिकीय गरिबत का एक दुष्चक्र बनाते हैं। नरिधन समुदाय अक्सर अपनी आजीविका के लिये प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर रहते हैं, जिससे अत्यधिक दोहन और पर्यावरण क्षरण होता है। इसके अलावा, अपर्याप्त बुनियादी ढाँचे और स्वच्छता सुविधाएँ प्रदूषण एवं पर्यावरणीय स्वास्थ्य संबंधी खतरों में योगदान करती हैं, जिससे कमजोर आबादी पर बोझ और बढ़ जाता है।

कृषि विस्तार, वनामूलन एवं बुनियादी ढाँचे के विकास सहित विभिन्न कारकों के कारण वनों का अत्यधिक क्षरण हुआ है जिसने वनों पर दबाव में वृद्धि की है। जनजातीय समुदाय, जो अक्सर भारत में सबसे नरिधन लोगों में से हैं, अपनी आजीविका के लिये वनों पर निर्भर हैं, जिसमें ईंधन हेतु लकड़ी, भोजन और औषधीय पौधे शामिल हैं। जैसे-जैसे वन सिकुड़ते हैं, इन समुदायों को बढ़ती नरिधनता और पारंपरिक ज्ञान के नुकसान का सामना करना पड़ता है, जिससे अभाव और पारस्थितिकीय गरिबत का एक दुष्चक्र बन जाता है। अस्तित्व के लिये संघर्ष कभी-कभी उन्हें अवैध कटाई या संरक्षित क्षेत्रों पर अतिक्रमण जैसी अस्थिर प्रथाओं में विवश कर सकता है, जिससे पर्यावरणीय गरिबत और भी बढ़ जाती है।

तेजी से आपस में जुड़ती दुनिया में, नरिधनता का प्रभाव राष्ट्रीय सीमाओं से परे है, जिसका प्रसार व्यापार, प्रवास और संचार नेटवर्क के माध्यम से अंतरमहाद्वीपीय है। वैश्वीकरण ने आर्थिक अंतरनिर्भरता को तीव्र किया है, जिससे समृद्ध विकास के सभी स्तरों पर राष्ट्रों के कल्याण पर निर्भर है। एक क्षेत्र में आर्थिक मंदी का वैश्विक बाजारों पर व्यापक प्रभाव हो सकता है, जो आधुनिक अर्थव्यवस्थाओं की परस्पर अंतरसंबंधित प्रकृति को उजागर करता है।

इस चुनौती के नदिन हेतु स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ठोस प्रयासों की आवश्यकता है। संसाधन एकत्रीकरण, विशेषज्ञता साझाकरण एवं नरिधनता उन्मूलन की प्रभावी रणनीतियों को लागू करने के लिये अंतरराष्ट्रीय सहयोग आवश्यक है। संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्य (SDG) जैसी पहल सामूहिक कार्रवाई के लिये एक रूपरेखा प्रदान करती है, जिसका लक्ष्य 2030 तक नरिधनता को उन्मूलित करना है तथा साझा समृद्धि को बढ़ावा देना है। इसके अलावा, अंतरराष्ट्रीय सहायता और विकास सहायता नरिधन समुदायों का समर्थन करने एवं अनुकूलित समाजों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

प्रभावी नरिधनता उन्मूलन रणनीतियाँ समुदायों को अपने स्वयं के विकास में परिवर्तन के अभिकर्ता बनने के लिये सशक्त बनाती हैं। महिलाओं, स्थानीय लोगों एवं ग्रामीण आबादी सहित हाशिये पर मौजूद समूहों का सशक्तीकरण समावेशी विकास और सतत विकास को बढ़ावा देने के लिये महत्वपूर्ण है। शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा एवं आजीविका के अवसरों में निवेश करके, समुदाय नरिधनता के चक्र से मुक्त हो सकते हैं और व्यापक आर्थिक व सामाजिक प्रगति में योगदान दे सकते हैं।

" नरिधनता कहीं भी हो, हर जगह की समृद्धि के लिये खतरा होती है" यह वैश्विक समाजों और अर्थव्यवस्थाओं के मध्य गहन अंतरसंबंधता को दर्शाता है। नरिधनता मानवीय गरमा, आर्थिक प्रगति और सामाजिक सामंजस्य को कमजोर करती है, जिससे स्थानीय एवं वैश्विक दोनों स्तरों पर समृद्धि को खतरा पैदा होता है। नरिधनता को संबोधित करने के लिये समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो आर्थिक अभाव से लेकर सामाजिक बहिष्कार एवं पर्यावरणीय गतिविध तक इसके बहुआयामी प्रभावों को संबोधित करे। नरिधनता उन्मूलन को प्राथमिकता देकर और अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देकर, हम सभी के लिये एक अधिक न्यायसंगत एवं समृद्ध विश्व का निर्माण कर सकते हैं। वैश्विक नागरिकों के रूप में, हमें नरिधनता से निपटने और भविष्य की पीढ़ियों के लिये सतत विकास को बढ़ावा देने में अपनी साझा ज़िम्मेदारी को पहचानना चाहिये।

नरिधनता हिसा का सबसे निकृष्ट रूप है।

—महात्मा गांधी

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/poverty-anywhere-is-a-threat-to-prosperity-everywhere>

